

DPN 5919

Title : अष्टमङ्गल गाथा AṢṬA MAṆḌALA GĀTHĀ

Run. No. 6610

Cat. No.

Micro. No.

Subject

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 21 x 6.8

Folios 7

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

फणीन्द्र रत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
ॐ नमो मञ्जुशाय ॥ मञ्जुश्री लोकेनाथ जिनका मकुण्डजंवा वज्रसत्त्व मैत्रीयवज्र
पाणि सुहृदायि स्वरो राहुते मद्रपालो, बुद्धे वेगेचनाथं त्रिभुवन नामित ...

समाप्ति / Colophon

इति अथ मङ्गला गाथा एतेन समाप्तं ॥ ॥

अष्टमंगल गाथा

ॐ ४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ४॥

सहस्रनाम ४॥ ४॥ ४॥

मंगलातः

प्रसादिन्द्रलवजीयाम

0 cms.

5

10

15

20

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलाक्षय्याय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ जिनवचनमङ्गलं जं वचनं कसत्त्वमेणीय व
जपादि सूरवचनयित्वा वाचां कृपापात्रा वृक्षाववाचनाद्यं हि दुवननमि तं
कीननिशगषदाषः सुखासर्वार्थसिद्धिविमलसमलसममंगलं वाधिसत्त्वः ॥ १ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ संघट्टे लावधुगुणगलनिलयावाधिविरुसाचलपुष्पासात्र
॥ विजिगजिनगुणहनुकानिललंदवृक्षासात्रन्द्राजाविजिगजिनगुणः
सधसत्त्वानुकीपादुल्ला॥ ३ ॥ पद्माचन्यावगात्रातदनृजहृकटिहानसीगात्र
गात्रासावित्रीसात्रमालासकलरुयहवापीगवर्क्षीतिवक्रामायूवीमामकिचक्र
पितृविपगलपांडवालीचनार्शदुल्ला॥ ४ ॥ गमत्राविजांगुलिचलुजनहि

नकत्राखं पाशं कृष्णं गवात्रादि वज्रहस्ता अशिपत्र शुधवा धर्मधारा ध्वनी च
कैयूरी ह्यान सूत्रा ध्वजनहि नकत्रा खर्गपाश वलिच दुह्वा ५॥ ७ ॥ विद्या मा
ल्या स्वर्गविगात्रा पथितजिनवत्र सावत्रधूपवका वेगात्रिघण्टवजा पहसितवद
नर्गि आर्यगात्रा वस्मि वृद्धस्य वाधिसकल रुय रुवा सावधिधिपवका दुह्वा
॥ वैशाल्या धर्मचर्क पथितजिनवत्र पर्वतग ध्वकूट सावर्णा लूविनीः

नकत्र काषनवाधिशृङ्ग श्रीम ७ दावगात्रं सूत्रवत्रनमिता शारु लं
क दुह्वा ५॥ १ ॥ ॥ कर्णध्ववाजपमं ध्वजवत्रनमिर्ग लाचनामकसुर्ज
वात्रादिपुं कं रुमनिवत्रवचनं वज्रघञ्जनिधानां वृद्धानां पाणिहार्य सूत्रव
त्रनमिर्ग द्वाप्य लाप्य विलास दुह्वा सर्वार्थ सिद्धि विमलसमस्रसुर्मग लंबाधि
सत्व ५॥ ६ ॥ ॥ ॐ ति अहममङ्गला गथा स्तुति समाप्त ॥ ॥ ॐ ॥









ॐ एष कन्य मङ्गलं किं मिथं उल्लङ्घयन्ति ककटविद्धमी न डरुव ॥ धनं च माचो हसिय ॥
नामि पूर्व द्वितीयादमवाहय हृणी उकादमी चान् च दुर्वा दनिने अरु पी च उयादमी याम्यां षष्ठिरुपाय
पश्चिम सफमी पूर्ण वायुयी अमा वास्या हमी मि व ॥ धनं गिनी ॥ ॥ चंड सन्मुख च नु नारं वा म हा नि धन
कयं ॥ पृष्ठ च ॥ क स का पं द कि ॥ अ च सु रं र व ॥ ॥ अ गिनी स ख दा वा म पृष्ठ वां कि न दा य नी ॥ द कि
॥ धन ह कि व स न्मुख म न र्ग प दा ॥ ॥ ह स क व र म नि वा य द व आ व पं ति यी वृ ध ने अ ग ष ॥ याम्या
उ न् उ क व सा नि कू ल म नो उ पूर्व नि व र्ग ति का ल ॥ ॥ ॥ ह व मं र्ग पु त र ग म वि पू र व सा ॥